भालू कैसे सोते हैं?

ई. जे. बर्ड

हिंदी: छाया भदौरिया

भालू कैसे सोते हैं?

हवा में ठंडक है और भूरे, बादलों वाले आसमान से बर्फबारी का समय हो चला है – यही सर्दी आने का एक संकेत है। एक बार फिर भालुओं के लिए समय आ गया है कि वे छिपने और शीतनिद्रा में जाने के लिए एक आरामदायक जगह खोजें। क्या आपने कभी सोचा है कि वसंत तक के उन लंबे, अँधेरे महीनों के दौरान भालुओं का क्या होता है? भालू कैसे सोते हैं?

कलाकार और कहानीकार ई. जे. बर्ड इस प्रिय पुस्तक में शीतनिद्रा में पड़े भालूओं की आदतों के बारे में आश्चर्य व्यक्त करते हैं। क्या वे करवटें बदलते हैं? क्या वे सपने देखते हैं? और वे पूरी सर्दी गर्म कैसे रहते हैं? भालू के हास्यपूर्ण चित्र और मूर्खतापूर्ण भालू के प्रश्न बच्चों को हँसाते रहेंगे और आश्चर्यचकित करेंगे कि जब भालू सोते हैं तो वास्तव में क्या होता है।

भालू कैसे सोते हैं?

ई. जे. बर्ड

हिंदी: छाया भदौरिया

उन सभी बच्चों के लिए जो इतने भाग्यशाली हैं कि उन्हें नान जैसी दादी, मेरी प्यारी पत्नी और बहुत खास दोस्त मिलीं।
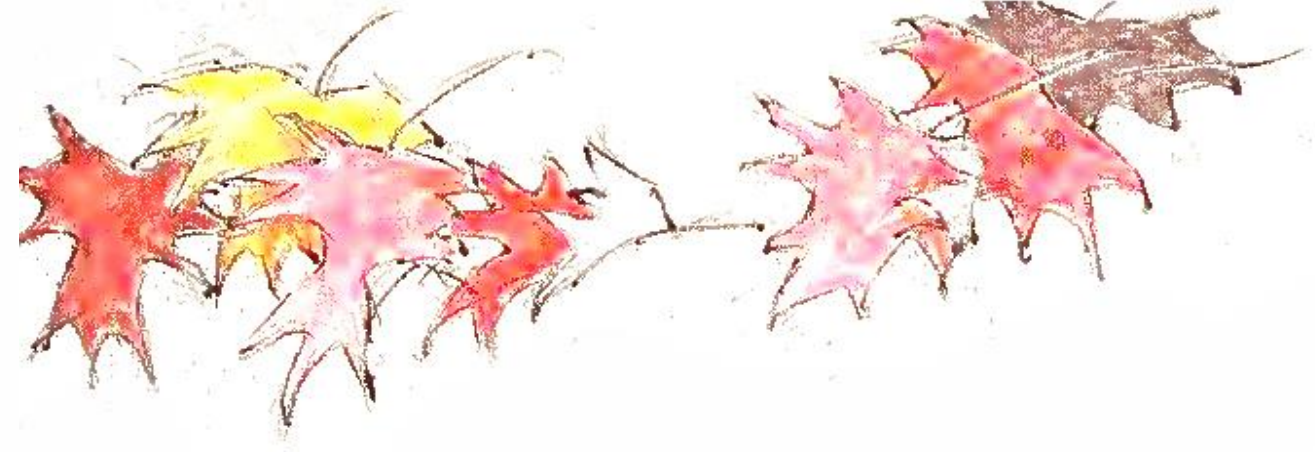
लेखक की कलम से

सभी जीवित चीजों के अंदर कहीं न कहीं छोटे-छोटे घड़ीनुमा उपकरण दबे होते हैं जो उन्हें बताते हैं कि उन्हें कितनी तेजी से बढ़ना है, कब बूढ़ा होना है, कब भूख लगनी है या नींद आनी है- जैसी चीजें।

कुछ जानवरों, जैसे गिलहरी और ग्राउंडहॉग, मेंढक और भालू के पास घड़ियाँ होती हैं जो उन्हें बताती हैं कि अब पूरी सर्दी सोने का समय आ गया है। हाँ भई हाँ-पूरी सर्दी। अंत में वे स्वयं को मौसम से परे एक गुफा की तरह किसी स्थान पर पाते हैं, और वे वास्तव में सो जाते हैं। इसे हाइबरनेटिंग कहा जाता है। और उनके द्वारा जमा की गई सारी चर्बी ही उन्हें सोते समय जीवित रखती है।

ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने सर्दी के दिनों में गिलहरियों के घोंसले खोल दिए हैं या कीचड़ में से मेंढक खोदकर निकाल लिए हैं, लेकिन जहाँ भालू सो रहे हैं, वहाँ बहुत से लोग ताक-झाँक नहीं करते हैं। मुझे अक्सर आश्चर्य होता है कि उस गुफा में भालुओं के साथ क्या चल रहा होता है - क्या आपने नहीं सोचा?

उत्तरी हवा सरसराए

सूखी पत्तियाँ उड़-उड़ जाएँ

बर्फ़ भी यहाँ-वहाँ

उड़ती-बहती नज़र आए
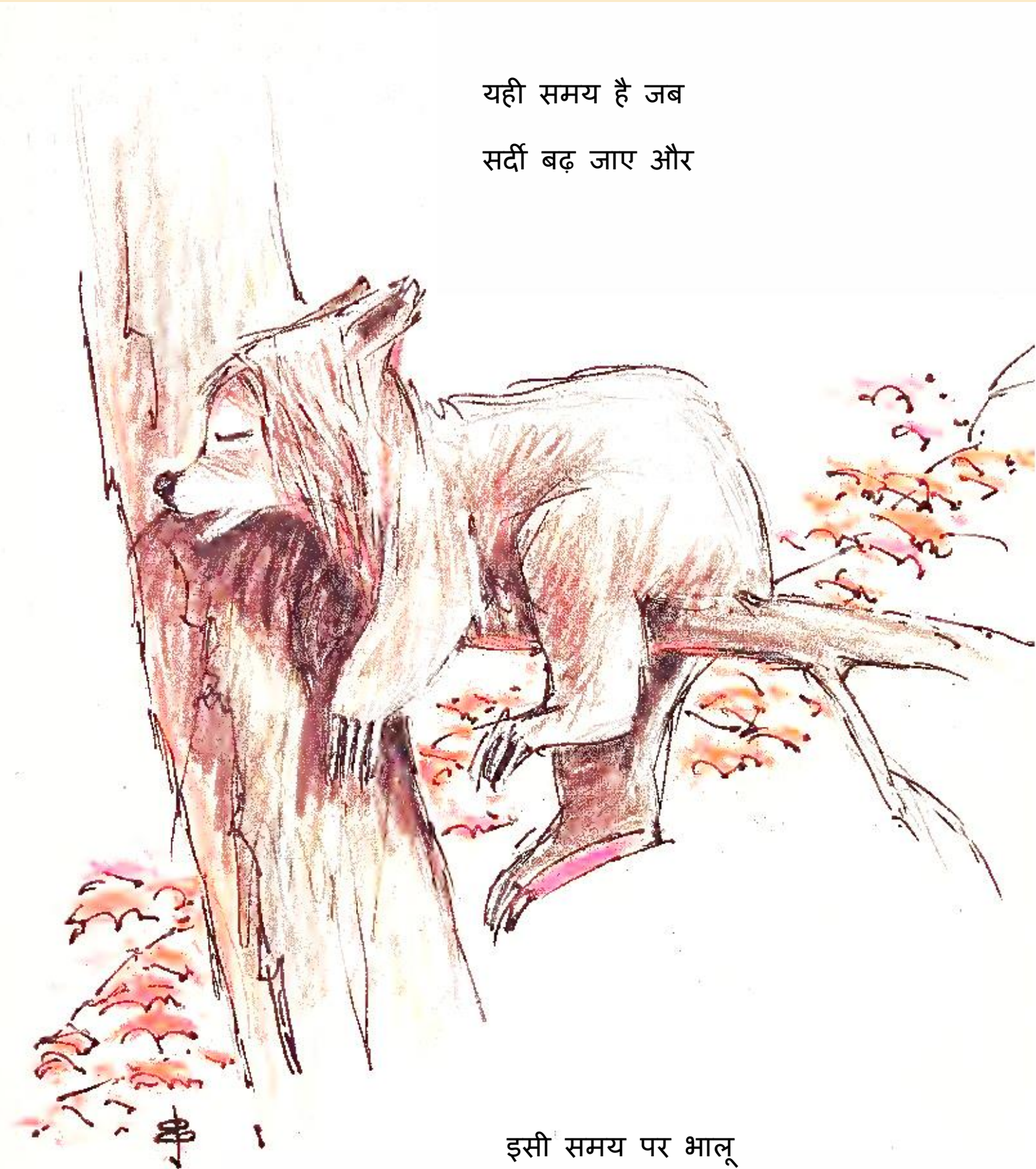
यही समय है जब

सर्दी बढ़ जाए और

इसी समय पर भालू

सोने के लिए अड़ जाए

गुफा की खोज में
ऊपर नीचे जाता है
बर्फ़ से बचने का जब तक
उपाय नज़र नहीं आता है।

दोस्तों से पूछ-पूछकर मैं थक जाता
लेकिन किसी को नहीं है मालूम
इतनी ठंडी सर्द हवा में
भालू कैसे है सो जाता।

सूखे पत्ते और पत्थर

क्या यही है उसका बिस्तर?

या धरती माँ की गोद में

सोता है वो सिर रखकर?

क्या वो सोता पेट के बल

या फिर सोता चित्त होकर?

क्या फाड़े वह पूरा मुँह

या फिर थोड़ा सा बंद कर

क्या वह मुड़ता? क्या वह घूमता?
क्या वह चिड़-चिड़ हो गुर्राता?
क्या वह अपना बिस्तर फाड़ता
जब वह उसमें गाँठें पाता?

क्या वह बिल्कुल सीधा लेटता,
नहीं ज़रा भी हिलता-डुलता
या फिर उठा के पंजा अपना
यहाँ वहाँ है वो खुजलाता?

क्या वह पाहन के तरतीब में

अपना काफ़ी समय लगाए?

जिससे उसके कंधों में

एक खरोंच भी ना आए

क्या वह अपनी आँख फाड़ के

लगातार है घूरता रहता

या फिर आँखें बंद करके

कुछ भी है सोचता रहता?

क्या वह बिस्तर पर लेटे ही रहता

और अँधेरे में कनखियों से देखता?

क्या वह अपनी भूरी आँखों को

लाल होने तक रगड़ता ही रहता?

क्या वह गेंद के जैसे गोलमगोल होता?

क्या वह रोता या खर्राटे लेता?

क्या वह डरावने सपने देखता

और दहाड़ मारकर उठता?

हो सकता है वह सपने देखता

लकड़ियों के नीचे लगे लार्वा का,

गर्मियों की ठंडी शाम

और मेंढ़कों के टर्राने का।

शायद हैं ये स्ट्रॉबेरी
खूब रसीली टपकने वाली,
जूस है इसका इतना पतला
बन गई ये तो पीने वाली।

या ऊँचे पर्वतीय घास के मैदान
बहती साफ़ दक्षिणी हवा,
बादल सफ़ेद फीते जैसे
उगते फूल यहाँ-वहाँ।
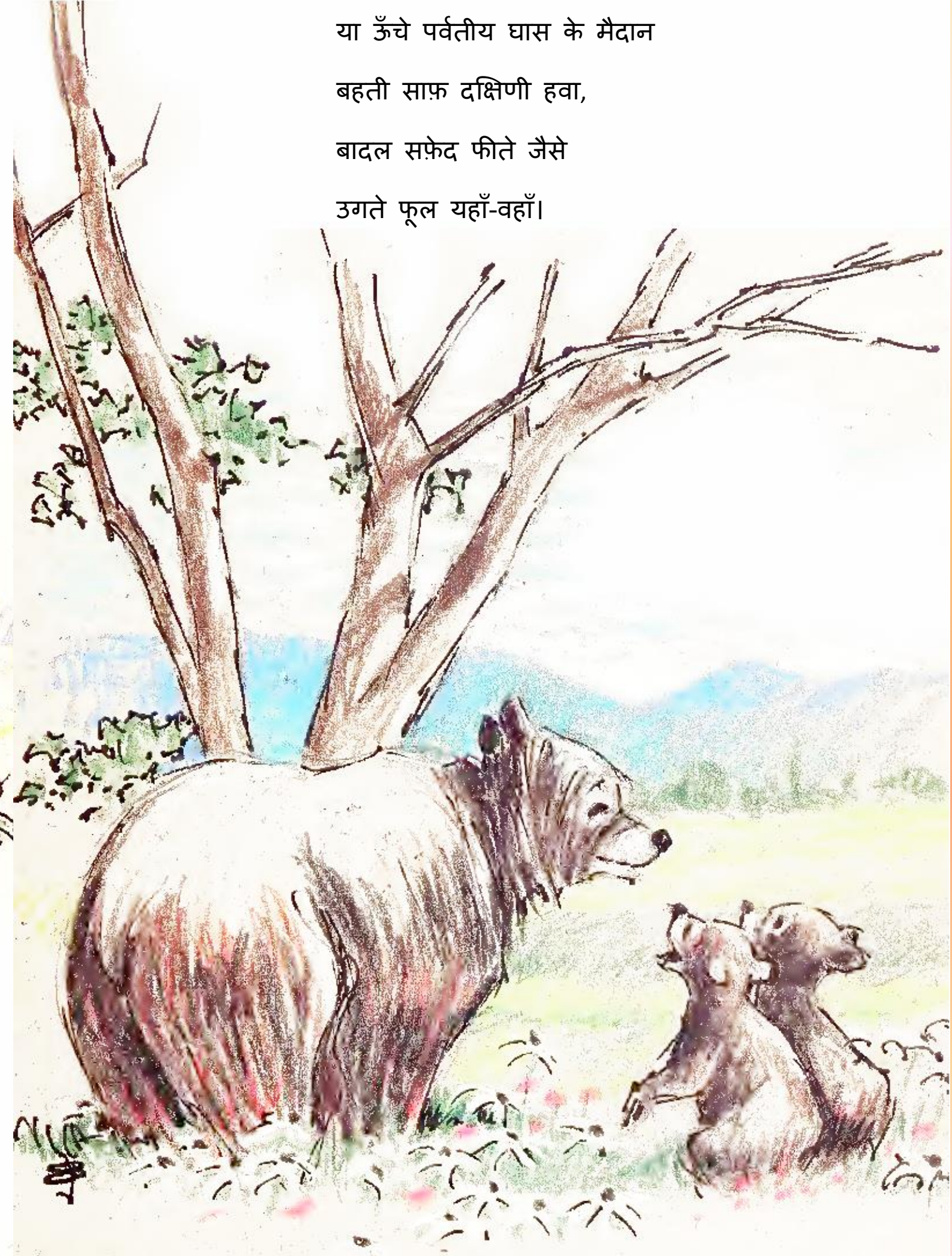
या नरम रात है गर्मी की

झींगुर का है संवेद स्वर

फुसफुसाहट सी है हवा की

चाँद यहाँ निकला है टूटकर
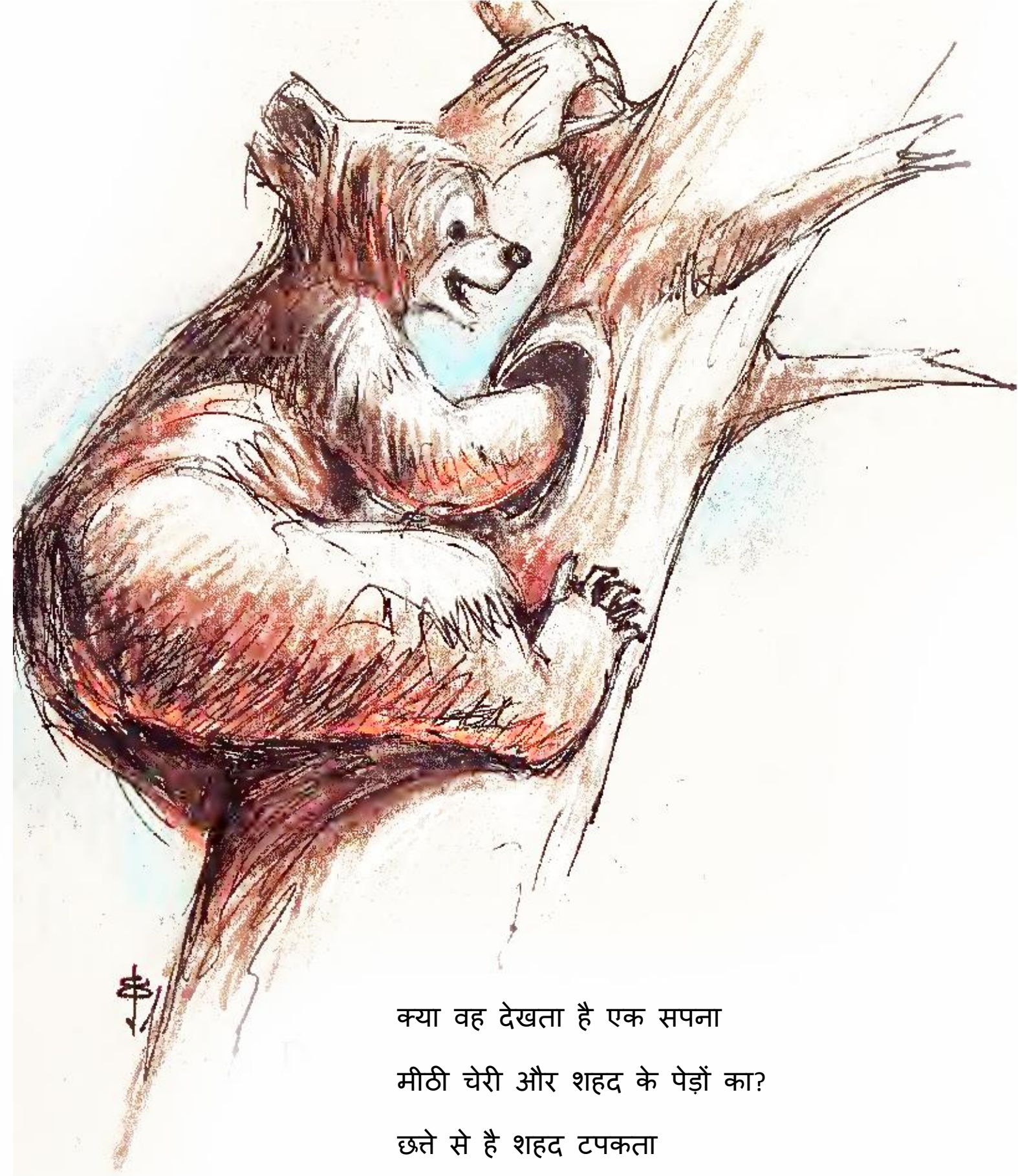
क्या वह देखता है एक सपना

मीठी चेरी और शहद के पेड़ों का?

छत्ते से है शहद टपकता

नहीं नाम कहीं मधुमक्खियों का?

अभी यहाँ पर है एक मसला
मुझे नहीं कुछ ठीक है लगता
अभी रात तो हुई नहीं है
कैसे है वह सो सकता?

कैसे गँवाया क्रिसमस उसने
नहीं सुना नए साल का हॉर्न?
कैसे बेफिक्र होकर उसने
कर लिया खुद को बिल्कुल मौन?

ठंडी हवा का तेज़ झोंका
उसके गले को जमा देता
इतने बर्फ़ीले तेज़ तूफ़ान में
कैसे है वो सो सकता?

अलसाया और ऊँघता भालू
आँखें उसकी थकी हुई,
क्या बालों से मिलेगी गरमी
गुफ़ा है उसकी बर्फ़ से ढकी?
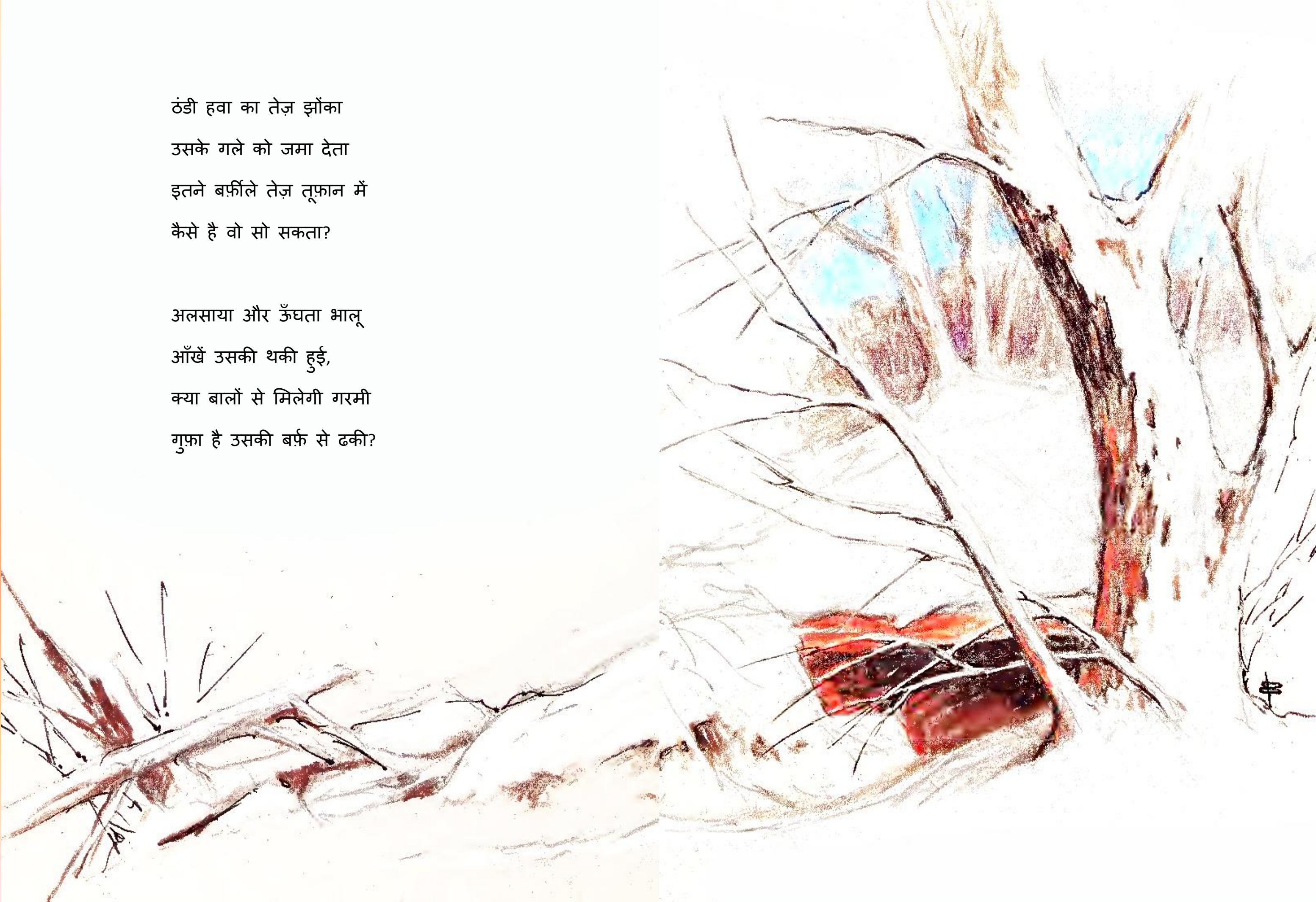
सोच-सोच कर हम घबराएँ
नवंबर से अप्रैल तक भालू
बिन पानी कैसे जी जाएँ!

अगर मैं हो जाऊँ नब्बे बरस का
तो भी मेरी समझ के परे
शीत ऋतु की बर्फ़ में भी
भालू कैसे सोते रहे।
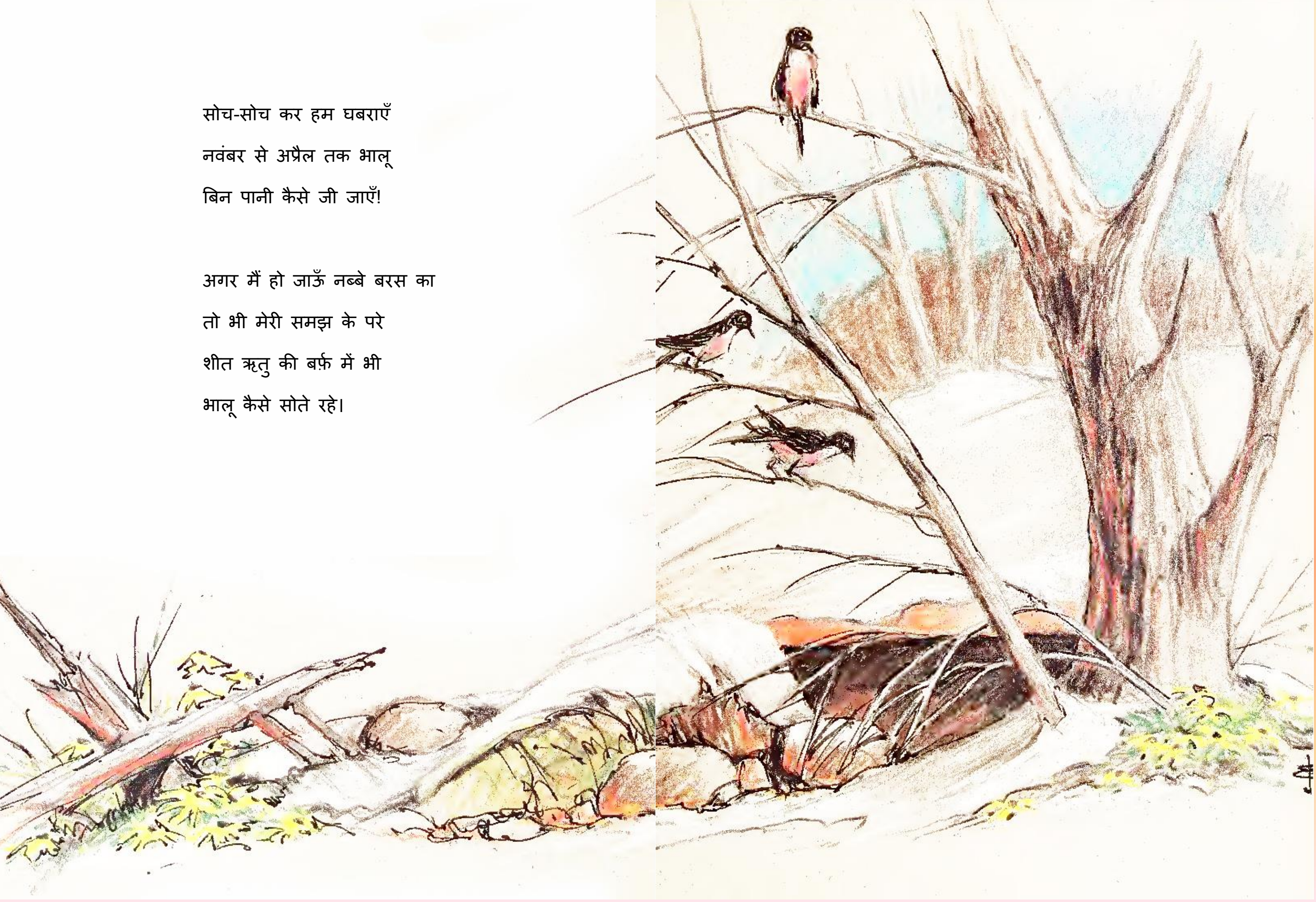
यहाँ-वहाँ जाना ताक-झाँक करना

मुझको तो बस इतना पता

जागते हुए भालू को ढूँढ़ना

सबसे भयानक मूर्खता!

लेखक और चित्रकार के बारे में

ई. जे. बर्ड का जन्म यूटा की तलहटी में एक व्यक्ति के चट्टानी खेत में हुआ था। एक छोटे लड़के के रूप में, उनके पास खेलने के लिए हमेशा बहुत सारे जानवर होते थे। उनके पास पालतू घोड़े के बच्चे, बछड़े, कुत्ते और मुर्गे थे। एक बार उनके पास एक मैगपाई था जो बात कर सकता था और एक काला मेमना था जो उन्हें एक छोटी लकड़ी की गाड़ी में बिठाकर खींचता था। जैसे-जैसे वे बड़े हुए, उन्होंने अपने आस-पास के प्राणियों को चित्रित करना शुरू कर दिया, और उन्होंने सीखा कि जब वे कैनवास पर सही या गलत दिखते हैं तो कैसे बताना है। मिस्टर बर्ड ने रैंच हैंड और एक पेशेवर कलाकार के रूप में काम किया है, और वे अभी भी जानवरों को देखना पसंद करते हैं - विशेषकर भालू को। वे कैरोलहोडा शीर्षक टेन टॉल टेल्स और चक वैगन स्टू के लेखक और चित्रकार हैं।